INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH IN COMMERCE, IT, ENGINEERING AND SOCIAL SCIENCES (IJRCIESS) ISSN: 2349-7793
Vol. 4 No. 7 (2010): July
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

महिलाओं के प्रति स्वामी विवेकानंद के विचार

डॉ0 केशरी नन्दन मिश्रा
सदस्य, माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

सारांश
स्वामी विवेकानंद महिलाओं की मुक्ति के बजाय उनके उत्पीड़न के प्रति अत्यधिक सहानुभूति रखते थे। उन्नीसवीं सदी में राजा राममोहन राय, केशव चंद्र सेन, ज्योतिबाफुले, आत्माराम पांडुरंग और विद्यासागर जैसे स्वतंत्र विचारों वाले समाज सुधारकों ने महिलाओं के खिलाफ क्रूर अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी। लेकिन नारीवाद पर आधुनिक समय के निर्णय के बीच में एक नाम है जब तक भुलाया या मना नहीं किया जाता, महान भारतीय योगी विवेकानंद। उन्हें एक महान राष्ट्रवादी नेता, कर्मयोगी और आधुनिक भारतीय इतिहास में वेद के भक्त के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने कहा कि आने वाली भारतीय महिलाएं शानदार उपलब्धियां हासिल करेंगी। पुरुषों की तरह महिलाओं को स्वतंत्रता और जवाबदेही का आनंद लेने के लिए स्वीकार्य होना चाहिए। स्वामी विवेकानंद महिलाओं की स्वतंत्रता और निष्पक्षता के लिए काम करने और घर और समाज के उचित कामकाज के लिए उनकी प्रमुखता को महसूस करने वाले प्रमुख मठवासी थे। स्वामी जी ने सोचा था कि हमारे देश में महिलाओं की असंख्य कमियों के पीछे मुख्य उद्देश्य अच्छी शिक्षा की कमी है। स्वामी जी ने परिमाणित किया कि यदि महिलाओं को अच्छी शिक्षा मिलती है तो वे अपनी कठिनाइयों को अपने तरीके से हल कर सकती हैं और उन्हें यह भी समझना चाहिए कि शुद्धता का अर्थ क्या है, क्योंकि यह उनकी विरासत है।

मूल शब्द: उन्नीसवीं सदी, महिलाएं, स्वतंत्रता, समाज, शिक्षा

प्रस्तावना

महिलाएं हमेशा से भारतीय सभ्यता की जीवन-शक्ति रही हैं, और इसलिए इसे इसके सदियों पुराने सभ्यतागत मूल्यों, संस्कृति और परंपराओं की अभिव्यक्ति के रूप में सही माना जाता है। हमारी एक अंतर्मुखी, आत्म-केंद्रित सभ्यता है जो आत्म-संयम, धैर्य, कर्तव्य और पीड़ा के मूल्यों को पोषित करती है और व्यक्ति को आत्म-संतुष्टि और आध्यात्मिक उत्थान की ओर ले जाती है, और चीजों के क्रम में सुंदरता की तलाश करती है।

इन मूल्यों को स्त्री की भारतीय अवधारणा में जटिल रूप से बुना गया है, जहां नारीत्व को उसी के जीवित अवतार के रूप में देखा जाता है। स्त्रीत्व के खिलाफ खड़ी होने वाली मर्दानगी की कठोर पश्चिमी धारणा को खारिज करते हुए, इंडिक ने सभी लोगों के बीच इन मूल्यों का एक अच्छा मिश्रण पैदा करने और विकसित करने की दिशा में एक सचेत प्रयास किया है।

हम इस बिंदु पर एक छोटी सी चेतावनी भी देना चाहेंगे। इस लेख में हमारा एकमात्र उद्देश्य महिलाओं के बारे में स्वामी विवेकानंद के विचारों पर प्रकाश डालना है, जो चर्चा और संजोने योग्य हैं, जहां तक कि वे कुछ भारतीय मूल्यों और स्त्रीत्व की धारणाओं पर जोर देने की आवश्यकता के लिए हमारे तर्क में सकारात्मक योगदान देते हैं।

किसी के भी लेखन और विचारों को अपने समय के संदर्भ में देखा और विश्लेषित किया जाना चाहिए। स्वामी विवेकानंद के लिंग पूर्वाग्रह के सभी दावों के लिए, हमें इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए कि उन्होंने, सिस्टर निवेदिता (या भगिनी निवेदिता जैसा कि वे उन्हें कहते हैं) और अन्य लोगों ने गरीब भारतीय महिलाओं के उत्थान में बहुत योगदान दिया।

वेदों में महिलाएं

"किस धर्मग्रंथों में आपको यह कथन मिलता है कि महिलाएं ज्ञान और भक्ति के लिए सक्षम नहीं हैं? पतन के काल में जब पुजारियों ने अन्य जातियों को वेदों के अध्ययन के लिए अक्षम बना दिया, तो उन्होंने महिलाओं को भी उनके सभी अधिकारों से वंचित कर दिया। अन्यथा आप पाएंगे कि वैदिक या उपनिषद युग में मैत्रेयी, गार्गी और अन्य श्रद्धेय महिलाओं ने ब्रह्म के बारे में चर्चा करने में अपने कौशल के माध्यम से ऋषियों का स्थान लिया है। एक हजार ब्राह्मणों की एक सभा में, जो सभी वेदों के ज्ञाता थे, गार्गी ने ब्राह्मण के बारे में चर्चा में याज्ञवल्क्य को साहसपूर्वक चुनौती दी। चूँकि ऐसी आदर्श स्त्रियाँ आध्यात्मिक ज्ञान की हकदार थीं, तो अब स्त्रियों को वही विशेषाधिकार क्यों नहीं मिलेगा? जो एक बार हुआ है वह निश्चित रूप से फिर से हो सकता है। इतिहास अपने आप को दोहराता है। सभी राष्ट्रों ने महिलाओं को उचित सम्मान देकर महानता प्राप्त की है। वह देश और वह राष्ट्र जो नारी का सम्मान नहीं करते, वे न कभी महान बने और न भविष्य में कभी होंगे। आपकी जाति के इतने पतित होने का मुख्य कारण यह है कि आपके मन में शक्ति की इन जीवंत छवियों का कोई सम्मान नहीं है। मनु कहते हैं, "जहाँ स्त्रियों का आदर होता है, वहाँ देवता प्रसन्न होते हैं। और जहां वे नहीं हैं, वहां सभी कार्य और प्रयास निष्फल हो जाते हैं।"

"यह समझना बहुत मुश्किल है कि इस देश [भारत] में पुरुषों और महिलाओं के बीच इतना अंतर क्यों किया जाता है, जबकि वेदांत घोषित करता है कि सभी प्राणियों में एक और एक ही चेतन आत्मा मौजूद है। आप हमेशा महिलाओं की आलोचना करते हैं, लेकिन कहते हैं कि आपने उनके उत्थान के लिए क्या किया है? स्मृतियों आदि को लिखकर, कठोर नियमों से बांधकर, पुरुषों ने महिलाओं को निर्माण मशीनों में बदल दिया है! यदि आप उन महिलाओं का पालन-पोषण नहीं करते हैं, जो देवी माँ के जीवित अवतार हैं, तो यह मत सोचिए कि आपके पास उठने का कोई और रास्ता है।"

विवेकानंद की सामाजिक पृष्ठभूमि

स्वामी विवेकानंद के लेखन, भाषण आदि के रूप में उपलब्ध प्राथमिक और माध्यमिक साक्ष्य की परीक्षा में प्रवेश करने से पहले, आइए हम उस पारिवारिक और सामाजिक पृष्ठभूमि पर एक संक्षिप्त नज़र डालें जिसमें विवेकानंद का पालन-पोषण हुआ था और काम पर मनोवैज्ञानिक ताकतों का आकलन करें। महिलाओं के बारे में उनकी धारणाओं को आकार देने में।

विवेकानंद का जन्म एक संपन्न हिंदू परिवार में हुआ था, उनकी मां भुवनेश्वरी देवी की धार्मिक प्रवृत्ति गहरी थी। वह एक उच्च उपस्थिति और शालीन आचरण वाली महिला थीं, जो निश्चित रूप से 'हिंदू नारीत्व की पुरानी परंपरा से

संबंधित' जैसी दिखती थीं। किसी भी अन्य आम लोगों की तरह, जो भारतीय ज्ञान परंपराओं का एक भावुक प्रेमी था, वह धार्मिक ग्रंथों रामायण और महाभारत में गहरी थी,

वास्तव में उनमें से कुछ अंशों को याद रखने के बाद वह एक युवा नरेन (जैसे विवेकानंद, या नरेंद्रनाथ दत्ता, जिसे बचपन में प्यार किया जाता था) को सुनाती थी। यह नोट किया गया है कि "वह गरीबों की विशेष शरणस्थली बन गई और ईश्वर के प्रति अपने शांत इस्तीफे, अपनी आंतरिक शांति और अपने कई कठिन कर्तव्यों के बीच अपनी गरिमापूर्ण टुकड़ी के कारण सार्वभौमिक सम्मान की आज्ञा दी" ।

स्वामी विवेकानंद के पूर्ण कार्यों में खुदाई करने से कुछ समृद्ध सामग्री का पता चलता है जिसे बार-बार देखा जाना चाहिए और उस पर प्रतिबिंबित किया जाना चाहिए। सबसे पहले, स्वामी विवेकानंद के अपने शब्दों में एक अस्वीकरण रखा जाना चाहिए:

महिलाओं के प्रति स्वामी विवेकानंद के विचार

"किसी भी राष्ट्र की मलिन बस्तियों का उत्पाद राष्ट्र के हमारे निर्णय की कसौटी नहीं हो सकता। कोई भी दुनिया के हर सेब के पेड़ के नीचे सड़े हुए, कृमि खाए हुए सेबों को इकट्ठा कर सकता है, और उनमें से प्रत्येक के बारे में एक किताब लिख सकता है, और अभी भी सेब के पेड़ की सुंदरता और संभावनाओं के बारे में कुछ भी नहीं जानता है। केवल उच्चतम और सर्वोत्तम में ही हम किसी राष्ट्र का न्याय कर सकते हैं - पतित अपने आप में एक जाति हैं।

"किसी राष्ट्र की प्रगति के लिए सबसे अच्छा थर्मामीटर उसकी महिलाओं का उपचार है। प्राचीन यूनान में स्त्री और पुरुष की स्थिति में कोई अंतर नहीं था। पूर्ण समानता का विचार अस्तित्व में था। कोई भी हिंदू तब तक पुजारी नहीं हो सकता जब तक उसकी शादी नहीं हो जाती, यह विचार कि एक अकेला आदमी केवल आधा आदमी है, और अपूर्ण है। पूर्ण नारीत्व का विचार पूर्ण स्वतंत्रता है। एक आधुनिक हिंदू महिला के जीवन का केंद्रीय विचार उसकी शुद्धता है। पत्नी एक चक्र का केंद्र है, जिसकी स्थिरता उसकी शुद्धता पर निर्भर करती है। यह इस विचार की चरम सीमा थी जिसके कारण हिंदू विधवाओं को जला दिया गया। हिंदू महिलाएं बहुत आध्यात्मिक और बहुत धार्मिक हैं, शायद दुनिया की किसी भी अन्य महिला की तुलना में अधिक। अगर हम इन सुंदर विशेषताओं को संरक्षित कर सकें और साथ ही साथ अपनी महिलाओं की बुद्धि विकसित कर सकें, तो भविष्य की हिंदू महिला दुनिया की आदर्श महिला होगी।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद, एक भविष्यवादी के रूप में, महिलाओं को हमारी सभ्यता के अग्रदूत और हमारे देश के भविष्य के निर्माता के रूप में देखते थे। उन्हें हिंदू धर्म और हमारी महिलाओं में बहुत विश्वास था और उनका मानना था कि हम दुनिया के आध्यात्मिक और नैतिक नेताओं के रूप में अपनी योग्य स्थिति में वापस आने में सक्षम होंगे। महिलाओं पर उनके विचारों पर सबसे महत्वपूर्ण रूप से पुनर्विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि वे उन नैतिकता और मूल्यों को उजागर करते हैं जिन्हें हमें एक बार फिर से एक समाज के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है।

नारी को हमारी संस्कृति में कर्तव्य, धैर्य, आत्म-संयम और पीड़ा के प्रतीक के रूप में माना गया है। यह केवल ये मूल्य हैं जो हमें पूंजीवाद और आधुनिकता के आधिपत्य के साथ लाए गए बेलगाम लालच, भोग और भ्रष्ट नैतिकता के खतरे से निपटने में मदद कर सकते हैं।

References

- Swami Tejasananda, A Short Life of Swami Vivekananda, Kolkata, Advaita Ashrama (Publication Department), 1995, p. 8.
- wami Vivekananda, "Ideals of Womanhood" (Brooklyn Standard Union, January 21, 1895), Reports in American Newspapers, Volume 2, Complete Works of Swami Vivekananda.
- wami Vivekananda, "The Sages of India", Lectures from Colombo to Almora, Volume 3, Complete Works of Swami Vivekananda.
- Swami Vivekananda, "The Women of India" (Lecture delivered at Cambridge, December 17, 1894), Lectures and Discourses, Volume 9, Complete Works of Swami Vivekananda.